FOERA, Vol. 1, 2023, pp 20 - 27 **ISSN-3048-6858**

उच्च प्राथमिक स्तर पर इतिहास शिक्षण की पाठ्यपुस्तकों का आलोचनात्मक अध्ययन

डॉ. राजीव अग्रवाल[1], विनय कुमार[2] एवं मान सिंह[3]

[1]एसोसिएट प्रोफेसर, शिक्षक-शिक्षा विभाग, अतर्रा पोस्ट ग्रेजुएट कॉलेज, अतर्रा (बाँदा) उत्तर प्रदेश

[2] शोध छात्र, शिक्षक-शिक्षा विभाग, अतर्रा पोस्ट ग्रेजुएट कॉलेज, अतर्रा (बाँदा) उत्तर प्रदेश

[3] शोध छात्र, शिक्षक-शिक्षा विभाग, अतर्रा पोस्ट ग्रेजुएट कॉलेज, अतर्रा (बाँदा) उत्तर प्रदेश

सारांश

किसी भी शिक्षण में पाठ्यपुस्तकों का महत्व बहुत अधिक है। इतिहास भूतकाल से संबद्ध है तथा भूतकाल के विषय में सजीवता की अनुभूति को जागृत एवं विकसित करने में पाठ्यपुस्तकें विशिष्ट भूमिका निभाती हैं। पाठ्यपुस्तकों को सूचनाओं का केंद्र माना जाता है। पाठ्यपुस्तकों में मात्र तथ्यों और सूचनाओं का संग्रह होने के कारण प्रायः इतिहास की विषय वस्तु नीरस तथा उबाऊ हो जाती है। अतः पाठ्यपुस्तकों का तथ्यात्मक होने के साथ आकर्षक एवं रोचक होना बहुत आवश्यक है। प्रस्तुत अध्ययन में इतिहास की पाठ्यपुस्तकों का अध्ययन इसी दृष्टिकोण से किया गया है। ताकि पाठ्यपुस्तकें विद्यार्थियों हेतु पर्याप्त प्रेरणादायक सिद्ध हो सकें।

मुख्य शब्द: *इतिहास शिक्षण, आलोचनात्मक अध्ययन, उच्च प्राथमिक स्तर, पाठ्यपुस्तक*

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005 के अनुसार स्कूली पाठ्यचर्या के चार सुपरिचित क्षेत्र- भाषा, गणित, विज्ञान और सामाजिक विज्ञान हैं। इतिहास सामाजिक विज्ञान की महत्वपूर्ण विधा है। इतिहास विषय मानव के सम्पूर्ण भूतकाल का वैज्ञानिक अध्ययन तथा प्रतिवेदन है। राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005 ने *"शिक्षा बिना बोझ के"* (1993) की रिपोर्ट की अनुशंसाओं के आधार पर स्कूली पाठ्यचर्या के सुपरिचित क्षेत्र सामाजिक विज्ञान में महत्वपूर्ण परिवर्तन के सुझाव दिए हैं। इतिहास की पाठ्यपुस्तकों के निर्माण के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005 महज शब्द आधारित पाठ के स्थान पर ऐसे पाठों की हिमायत करती है जिनमें गतिविधियाँ, चित्र, तस्वीरों, मानचित्रों, कार्टूनों का समावेश हो तथा वे विषयवस्तु के अभिन्न अंग हों। चित्र, तस्वीरें, मानचित्र आदि विषयवस्तु को रोचक तथा आनंददायक बना देते हैं। **(फौजदार, 2015)**

चित्रों द्वारा विद्यार्थियों की रचनात्मक क्षमता, सौन्दर्यबोध व आलोचनात्मक समझ विकसित होती है।

इतिहास की पाठ्यपुस्तकों में समावेशित चित्रों के माध्यम से विद्यार्थी ज्ञान ग्रहण करता है तथा नए ज्ञान का सृजन करता है। विद्यार्थी अपने आपको दूसरों से जोड़कर देखना सीखता है जिससे उसकी समझ बनती है। राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005 की विचारधारा के अनुसार एनसीईआरटी एवं उत्तर प्रदेश बेसिक शिक्षा परिषद द्वारा प्रमाणित इतिहास की पाठ्यपुस्तकें पाठ्य विषयवस्तु तथा सम्बन्धित दृश्य सामग्री के प्रस्तुतिकरण में किस सीमा तक न्याय कर पा रही हैं/अपने शैक्षिक उद्देश्य को साकार कर पा रही हैं? प्रस्तुत अध्ययन में इसी प्रश्न का हल खोजने का प्रयास किया गया है।

अध्ययन का औचित्य

इतिहास शिक्षण में ऐसी विधियां अपनाई जाना जरूरी हैं जो सृजनात्मकता, सौंदर्यबोध और समालोचनात्मक दृष्टिकोण को पैदा करती हों, साथ ही समाज में हो रहे परिवर्तनों को समझने के लिए विद्यार्थियों को अतीत और वर्तमान के बीच सम्बन्धों को जोड़ने में समर्थ बनाती हों। इतिहास शिक्षण में तस्वीरें, ग्राफ, चार्टों, नक्शों तथा पुरातात्विक और भौतिक संस्कृतियों की अनुकृतियों समेत श्रव्य-दृश्य सामग्रियों का इस्तेमाल करना अत्यंत आवश्यक है किंतु प्रश्न यह है कि क्या वर्तमान इतिहास शिक्षण में इनका उपयोग हो रहा है या नहीं?

इतिहास शिक्षण में सीखने की प्रक्रिया को सहभागितापूर्ण बनाने के लिए सिर्फ जानकारी प्रदान करने की परंपरा से हटकर चर्चा और बहस पर जोर देने की जरूरत है। सीखने की यह पद्धति शिक्षक और विद्यार्थी दोनों को सामाजिक वास्तविकताओं से जीवंतता के साथ जोड़े रखेगी। पाठ्यपुस्तकों और कक्षाओं में विषयवस्तु, भाषा और तस्वीरें समझ में आने वाली, लिंग भेद के प्रति संवेदनशील और हर प्रकार की सामाजिक असामान्यताओं के प्रति आलोचनात्मक होना चाहिए। क्या वर्तमान पाठ्यपुस्तकें एक बंद बक्से की तरह हैं या एक गतिशील दस्तावेज? क्या पाठ्यपुस्तकें आगे की जांच- पड़ताल के रास्ते खोलती नजर आ रही हैं या नहीं? यह तो अध्ययन के परिणाम ही बताएंगे। प्रस्तुत अध्ययन उपर्युक्त तथ्यों को ध्यान में रखकर किया गया है।

अध्ययन के उद्देश्य

- ❖ इतिहास की पाठ्यपुस्तकों में आरेखीय एवं दृश्य सामग्री का अध्ययन करना।
- ❖ इतिहास की पाठ्यपुस्तकों का आलोचनात्मक अध्ययन करना।
- ❖ इतिहास की पाठ्यपुस्तकों में विषयवस्तु की बोधगम्यता का अध्ययन करना।
- ❖ उत्तर प्रदेश बेसिक शिक्षा परिषद एवं सी.बी.एस.ई. बोर्ड द्वारा प्रमाणित इतिहास की पाठ्यपुस्तकों का तुलनात्मक अध्ययन करना।
- ❖ इतिहास शिक्षण से सम्बन्धित नवीनतम सामग्री व आधुनिक आयामों का अध्ययन करना।
- ❖ इतिहास पाठ्यक्रम को रुचिकर एवं अद्यतन (Update) करने हेतु सुझाव देना।

शोध विधि

प्रस्तुत अध्ययन में **वर्णनात्मक-अंतर्वस्तु विश्लेषण** विधि का उपयोग किया गया।

अध्ययन का सीमांकन

प्रस्तुत अध्ययन उच्च प्राथमिक स्तर पर उत्तर प्रदेश बेसिक शिक्षा परिषद एवं सी.बी.एस.ई. बोर्ड द्वारा प्रमाणित इतिहास की पाठ्यपुस्तकों तक सीमित है।

इतिहास की पाठ्यपुस्तकों के मूल्यांकन के मापदण्ड

प्रस्तुत अध्ययन में इतिहास की पाठ्यपुस्तकों के मूल्यांकन के लिए आर्थर बाइनिंग तथा डेविड बाइनिंग (Arther Bining and David Bining) द्वारा निर्धारित मापदण्ड अपनाए गए जो इस प्रकार हैं–

तालिका 1

पाठ्यपुस्तकों के मूल्यांकन के मापदण्ड

पाठ्य-वस्तु की व्यवस्था	**प्रस्तुतीकरण**	**चित्र, स्रोत, सन्दर्भ मानचित्र, चार्ट,**	**उदाहरण**	**मूल्यांकन प्रश्न**	**साज-सज्जा**
पाठों का संगठन	भाषा	संख्या	वस्तुनिष्ठता	---	पुस्तक का आकार
पाठों का तर्क संगत विभाजन	विस्तार	आकार	गुणात्मकता	पाठ्यवस्तु आधारित उपयुक्तता	जिल्द की सुदृढ़ता
पाठों की सुसम्बद्धता	शैली	शुद्धता	उपयुक्तता	--	कागज
सारांश	ऐतिहासिक शब्दावली	उपयुक्ता	स्पष्टता	छात्रों की दृष्टि से प्रश्नों की उपयोगिता	छपाई
अन्तर्निहित एकता	आधुनिकतम ज्ञान का समावेश	विस्तार	जीवन से सम्बद्धता	प्रश्नों में प्रेरणात्मक शक्ति	

इतिहास की पाठ्यपुस्तकों का आलोचनात्मक अध्ययन

प्रस्तुत अध्ययन में उत्तर प्रदेश बेसिक शिक्षा परिषद एवं सी.बी.एस.ई. बोर्ड द्वारा प्रमाणित इतिहास की पाठ्यपुस्तकों (उच्च प्राथमिक स्तर) का अध्ययन किया गया।

"हमारा इतिहास और नागरिक जीवन" कक्षा-6 (उत्तर प्रदेश बेसिक शिक्षा परिषद) —

उत्तर प्रदेश बेसिक शिक्षा परिषद द्वारा प्रमाणित इतिहास की उपर्युक्त पाठ्यपुस्तक के आलोचनात्मक अध्ययन में निम्न कमियां पाई गई –

उत्तर प्रदेश बेसिक शिक्षा परिषद द्वारा प्रमाणित इतिहास की पाठ्यपुस्तक ***हमारा इतिहास और नागरिक जीवन*** कक्षा 6 के पाठ-1 *कैसे पता करें क्या हुआ था और क्या नहीं,* पृष्ठ संख्या 7 में उल्लेख है कि जब मानव ने लिखना शुरू किया तो उसे कागज का ज्ञान नहीं था। वह लेखों को *ताड़पत्रों, भोजपत्रों* और *ताम्रपत्रों* पर लिखता था। किंतु **पाठ्यपुस्तक में ना तो ताड़पत्रों, भोजपत्रों एवं ताम्रपत्रों के कोई चित्र दिए गए हैं और ना ही इस बात का स्पष्ट उल्लेख है कि इन पर किस प्रकार से लिखा जाता था।**

इसी प्रकार पाठ-2 *पृथ्वी पर मानव,* पृष्ठ संख्या 13 में *आखेटक* शब्द दिया गया है किंतु **आखेटक शब्द को कहीं भी परिभाषित नहीं किया गया है। आखेटक का क्या अर्थ होता है। विद्यार्थी शब्द को रट तो लेंगे किन्तु शब्द का सही अर्थ नहीं समझ पायेंगे।** इसी पाठ पर पृष्ठ संख्या 14 पर पुरापाषाण काल के बारे में यह भी जानिए- के अन्तर्गत बताया गया कि उत्तर प्रदेश के मिर्जापुर जिले में कुछ गुफाएं मिली हैं जिनसे यह पता चलता है कि यहाँ मानव समूह में रहता था किन्तु **पाठ्यपुस्तक में उत्तर प्रदेश के मिर्जापुर जिले का मानचित्र नहीं लगाया गया जिससे छात्र मिर्जापुर की अवस्थिति के बारे में नहीं समझ पाएंगे।** अतः आवश्यकता इस बात की है कि जहाँ भी आवश्यक हो तो मानचित्र का प्रयोग किया जाए।

पाठ-2 पृष्ठ संख्या 16 में नवपाषाण काल के बारे में जानकारी देते हुए बताया गया कि अब यह मिट्टी के बर्तन बनाना भी जान गए थे। पहिए का आविष्कार भी हुआ। इसका प्रयोग मिट्टी से बर्तन बनाने तथा सामान ढोने में किया जाने लगा है। बर्तनों पर नक्काशी एवं चित्रकारी में रंगों का प्रयोग होने लगा। खेती के कारण लोग एक ही जगह रहने लगे। फलस्वरुप नये-नये कौशलों का विकास हुआ जैसे- *मूँज की टोकरी व चटाइयाँ बनाना, कताई करना, जानवरों के बालों से कपड़ा बनाना* आदि। किंतु **पाठ में न तो इनके कोई भी चित्र दिए गए हैं न ही यह कैसे बनती थी इस बारे में स्पष्ट उल्लेख है।** यहाँ पर यह जानकारी केवल मात्र रटने तक ही सीमित है।

इसी प्रकार पृष्ठ संख्या 16 में ही शवों (मृत व्यक्तियों) के दफ़नाने के ढंग बे बारे में बताया जा रहा है किन्तु **उससे सम्बन्धित कोई भी चित्र नहीं दिखाया गया। न ही इस पाठ पर महत्वपूर्ण शब्दावली के रूप में किसी शब्द को अलग से परिभाषित किया गया।** पाठ-3 *नदी घाटी सभ्यताएँ,* पृष्ठ संख्या 20 में मोहनजोदड़ों के स्नानागार का चित्र प्रदर्शित किया गया है **किन्तु इस बात का कहीं भी उल्लेख नही है कि स्नानागार कितना बड़ा था उसकी लम्बाई व चौड़ाई कितनी थी** । पाठ-4 *वैदिक काल* में 'चारे और पानी' की खोज नामक शिक्षण बिन्दु पर सिन्धु, सतलज, व्यास और सरस्वती नदियों का उल्लेख है। पाठ में मानचित्र का प्रयोग तो किया गया किन्तु **इन नदियों को मानचित्र में नहीं दर्शाया गया। न ही यह बताया गया की ये नदियाँ वर्तमान में किन राज्यों में**

हैं। पृष्ठ संख्या 32 में यज्ञ और वेदों के बारे में बताते हुए कहा गया कि आर्य लोग प्रारम्भ में अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए देवताओं को प्रसन्न करने के लिए स्तुतिपाठ करते थे। बाद में यज्ञ करने लगे। यज्ञ का कार्य पुरोहित करवाता था। किन्तु **स्तुतिपाठ और पुरोहित शब्द का क्या अर्थ होता है यह नहीं बताया गया न इन शब्दों को शब्दावली के रूप में जोड़ा गया**।

पृष्ठ संख्या 32 पर ही *ऋग्वेद* के बारे में जानकारी दी गयी है परन्तु **ऋग्वेद के विषय में बहुत स्पष्ट जानकारी नहीं दी गयी न ही ऋग्वेद के किसी एक पांडुलिपि का एक पन्ना चित्र के रूप में दिखाया गया**। पाठ-5 *महाजनपद की ओर* पृष्ठ संख्या 36 में कहा गया की 600 ई०पू० में 16 महाजनपद थे। इन महाजनपदों में से चौदह में राजतन्त्र तथा दो गणतंत्र था। किन्तु **16 महाजनपदों में से सिर्फ 4 महाजनपदों का उल्लेख है शेष महाजनपदों का उल्लेख नहीं। और यह भी स्पष्ट नहीं कि जिन दो महाजनपदों में गणतंत्र था वो कौन से महाजनपद थे।**

(उ०प्र० बेसिक शिक्षा परिषद्, 2019)

हमारे अतीत-I कक्षा-6 (एन.सी.ई.आर.टी.)—

सी.बी.एस.ई. द्वारा प्रमाणित इतिहास की उपर्युक्त पाठ्यपुस्तक के आलोचनात्मक अध्ययन में निम्न कमियां पाई गई -

एनसीईआरटी द्वारा प्रकाशित इतिहास पाठ्यपुस्तक हमारे अतीत-I के अध्याय 4 *आरंभिक नगर* पृष्ठ संख्या 32 में हड़प्पा की कहानी बताते हुए हड़प्पा पुरास्थल के सम्बन्धित खंडहरों पर चर्चा की गई है। **किंतु पाठ्यपुस्तक में हड़प्पा के खंडहर से सम्बन्धित कोई चित्र नहीं दिया गया**। इसी प्रकार हमारे अतीत-I पृष्ठ संख्या 33 में मानचित्र-3 में उपमहाद्वीप के आरंभिक नगर को दर्शाया गया है परंतु **मानचित्र स्पष्ट रुप से समझ में नहीं आ रहा है तथा रंगीन नहीं है।** इसी प्रकार हमारे अतीत-I पृष्ठ संख्या 33 पर ही नगरों की विशेषता क्या थी पर चर्चा करते हुए लिखा है कि "नगरों को दो या उससे ज्यादा हिस्सों में विभाजित किया गया था। प्रायः पश्चिमी भाग छोटा था लेकिन ऊंचाई पर बना था। पूर्वी हिस्सा बड़ा था लेकिन निचले हिस्से में था। ऊंचाई वाले भाग को *नगर-दुर्ग* कहा गया और निचले हिस्से को *निचला-नगर* कहा गया। **किंतु पाठ्यपुस्तक में *नगर-दुर्ग* एवं *निचला-नगर* से सम्बन्धित कोई भी चित्र नहीं दर्शाया गया**। इसी प्रकार हमारे अतीत-I पृष्ठ संख्या 34 पर मोहनजोदड़ो के तालाब का चित्र प्रदर्शित किया गया। **किंतु यह नहीं बताया गया कि तालाब कितना बड़ा था उसकी लंबाई और चौड़ाई कितनी थी**।

हमारे अतीत-I पृष्ठ संख्या 36 पर नगर और नए शिल्प से सम्बन्धित सबसे ऊपर पत्थर के बाट, मध्य में बाएँ मनके, तथा मध्य में दाएं पत्थर के धारदार फलक, तथा नीचे दाएं कढ़ाईदार वस्त्र से सम्बन्धित कुछ चित्र दिए गए हैं। किंतु चित्र अत्यधिक आकर्षक नहीं है। अतः प्रकरण से संबंधित आकर्षक रंगीन चित्रों का प्रयोग किया जाना वांछनीय है। हमारे अतीत-I *पृष्ठ संख्या 37 फ़ेयन्स* से सम्बन्धित चित्र दिया गया है। जो अस्पष्ट एवं अनाकर्षक है। पृष्ट संख्या 38 में लिखा है हड़प्पा के लोग तांबे का आयात सम्भवतः आज की राजस्थान से करते थे। यहाँ तक कि पश्चिम एशियाई देश ओमान से भी तांबे का आयात किया जाता था। कांसा बनाने के लिए तांबे के साथ मिलाए

जाने वाली धातु का आयात आधुनिक ईरान और अफगानिस्तान से किया जाता था **परंतु उन देशो से सम्बन्धित कोई मानचित्र प्रदर्शित नहीं किया गया।**

(एन.सी.ई.आर.टी.,2019)

अध्ययन के निष्कर्ष

- प्रचलित इतिहास की पाठ्य-पुस्तकों में पाठों का संगठन सही नहीं किया गया। कई प्रकरण बहुत बड़े हैं। जिन्हें छोटा करने की आवश्यकता है।
- पाठ्यपुस्तकों में भारत सरकार द्वारा मान्य शब्दावली का प्रयोग तो हुआ है किंतु कहीं-कहीं यह देखा गया की शब्द बहुत क्लिष्ट है।
- प्रचलित पाठ्य-पुस्तकों में उपयुक्त सहायक सामग्री चित्र, मानचित्र, रेखा-चित्र आदि का अभाव पाया गया है।
- उत्तर प्रदेश बेसिक शिक्षा परिषद द्वारा प्रचलित इतिहास की पाठ्य-पुस्तकों में चित्र बहुत छोटे तथा अस्पष्ट हैं।
- प्रचलित पाठ्य-पुस्तकों में स्रोत/संदर्भों का अभाव पाया गया। इस कारण इनका स्तर भी गिरा हुआ पाया गया।
- बाह्य साज-सज्जा के दृष्टिकोण से प्रचलित इतिहास की पाठ्यपुस्तकें निम्न श्रेणी की हैं।
- प्रचलित पाठ्य-पुस्तकों में भाषा-शैली का भी एक दोष पाया गया। भाषा-शैली का प्रयोग छात्रों के मानसिक स्तर, आयु तथा शब्द भण्डार के अनुसार नहीं हैं।
- उत्तर प्रदेश बेसिक शिक्षा परिषद द्वारा प्रचलित इतिहास पाठ्य-पुस्तकों में बहुत घनीभूत (Congested) सामग्री है।
- उत्तर प्रदेश बेसिक शिक्षा परिषद द्वारा प्रचलित इतिहास पाठ्य-पुस्तकों में फॉन्ट बहुत छोटा है तथा पंक्तियों के मध्य उचित अन्तराल नहीं है।
- उत्तर प्रदेश बेसिक शिक्षा परिषद द्वारा प्रचलित इतिहास पाठ्य-पुस्तकों में कागज तथा स्याही की गुणवत्ता उचित नहीं पायी गयी।
- पाठ्य-पुस्तकों में विषय-वस्तु का प्रस्तुतीकरण छात्रों के मानसिक एवं संवेगात्मक स्तर के अनुकूल नहीं है। वर्तमान पाठ्य-पुस्तकों में विषय-वस्तु का प्रस्तुतीकरण निबंधात्मक ढंग से किया गया।
- पाठ्य-पुस्तकों में पाठों के अन्त में अभ्यास के लिए पर्याप्त सामग्री नहीं दी गयी।
- पाठ्य-पुस्तकों में आधुनिक अन्वेषण एवं नवीन घटनाओं का समावेश नहीं है।

अध्ययन के सुझाव

- इतिहास की पाठ्य पुस्तकों के आलोचनात्मक अध्ययन करने पर इनमें बहुत सी कमियां पाई गई है। अतः इतिहास के पाठ्यक्रम में संशोधन किया जाना आवश्यक है।
- प्रचलित इतिहास की पाठ्यपुस्तकों में चित्र, मानचित्र, रेखा-चित्र, ऐतिहासिक पर्यटन आदि के चित्र बहुत कम एवं अस्पष्ट हैं। अतः प्रकरण से सम्बन्धित स्पष्ट एवं रंगीन चित्र यथास्थान वांछनीय है।
- इतिहास की पाठ्यपुस्तकों में विषय के गहन अध्ययन हेतु आधुनिक आयामों के वेबलिंकों का समावेश किया जाना चाहिए।
- इतिहास की पाठ्यपुस्तकों को अद्यतन करने की अत्यंत आवश्यकता है।
- इतिहास के पाठ्यक्रम में सामाजिक, आर्थिक, वैज्ञानिक, औद्योगिक एवं सांस्कृतिक घटनाओं एवं प्रगति को विशेष महत्व दिया जाए।
- क्षेत्र/ प्रांत की ऐतिहासिक विरासत/ शौर्य/ वीरता/ पराक्रम/ संस्कृति/ पुरुषार्थ का इतिहास उस क्षेत्र विशेष में विस्तृत रूप से/अतिरिक्त सहायक पाठ्यपुस्तक के रूप में शामिल किए जाने की आवश्यकता है।
- इतिहास की पाठ्यपुस्तकों की आन्तरिक एवं बाह्य साज-सज्जा/ कागज का स्तर/ प्रिन्टिंग इत्यादि उच्च गुणवत्तापूर्ण एव आकर्षक होनी चाहिए।
- इतिहास शिक्षण में पाठ्य सहगामी क्रियाओं के अन्तर्गत कठपुतली, मुखौटे, भूमिका निर्वाह (Role play), नाटक, फैन्सी ड्रेस शो, आदि को सम्मलित करने हेतु पाठ के अन्त में सम्बन्धित संकेतों को स्थान दिया जाना चाहिए।
- शैक्षिक भ्रमण हेतु ऐतिहासिक स्थल तक पहुँचने के मार्ग संकेत पाठ के अन्त में दिए जाने चाहिए।

सन्दर्भ

Bining, A.C. and Bining, D.H. (1952). Teaching Social Studies in Secondary School . New York. Tata McGraw Hill Book Company.

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद. (2005). राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा. नई दिल्ली, एन०सी०ई०आर०टी०.

(Retrieved from https://ncert.nic.in/pdf/nc-framework/hindi.pdf)

त्यागी, गुरुसरनदास. (2012). इतिहास शिक्षण. आगरा, अग्रवाल पब्लिकेशन.

फौजदार, हेमलता. (2015). एन०सी०ई०आर०टी० की इतिहास की पाठ्यपुस्तकों में चित्रों की भूमिका. भारतीय आधुनिक शिक्षा, 36 (4), 54–61. (Retrieved from https://ncert.nic.in/pdf/publication/journalsandperiodicals/bhartiyaadhunikshiksha/bas_april_2015.pdf)

रॉय, कुमकुम. (2016). सामाजिक विज्ञान की नई पाठ्यपुस्तकें. शिक्षा विमर्श. 18(4), 38–43. (Retrieved from https://www.digantar.org/uploads/shiksha-vimarsh/Complete%20Issue/2016_07_Issue.pdf)

नरोन्हा, अंजलि. (2011). लोकतंत्र के लिए शिक्षा—स्कूलों में सामाजिक विज्ञान शिक्षा की प्रासंगिकता. लर्निंग कर्व. (3), 23-27.

(Retrieved from https://apfstatic.s3.ap-south-1.amazonaws.com/s3fs-public/LC_Hindi3_2011.pdf)

हमारे अतीत-I: कक्षा-6. (2019). नई दिल्ली, एनसीईआरटी.

हमारा इतिहास और नागरिक जीवन: कक्षा-6. (2019). लखनऊ, उत्तर प्रदेश बेसिक शिक्षा परिषद.

Rajadhurai, G (2014). Status of social science teaching and learning in secondary schools in Chennai city. [Ph.D. thesis]. Manonmaniam Sundaranar University, Tamil Nadu. (Retrieved from http://hdl.handle.net/10603/24881)